city life
दैनिक भास्कर. CHANDIGARH, SUNDAY, 13/09/2026

भीतर के अंधेरों से उजाले तक की यात्रा है-अवेकनिंग विद नानक...

Book Talk

लेखिका कमला के कपूर की किताब अवेकनिंग विद नानक का विमोचन शनिवार को सेक्टर-10 के गवर्नमेंट म्यूजियम व आर्ट गैलरी में हुआ। इसे लेकर हमने उनसे बात की।

सिटी रिपोर्टर | चंडीगढ़

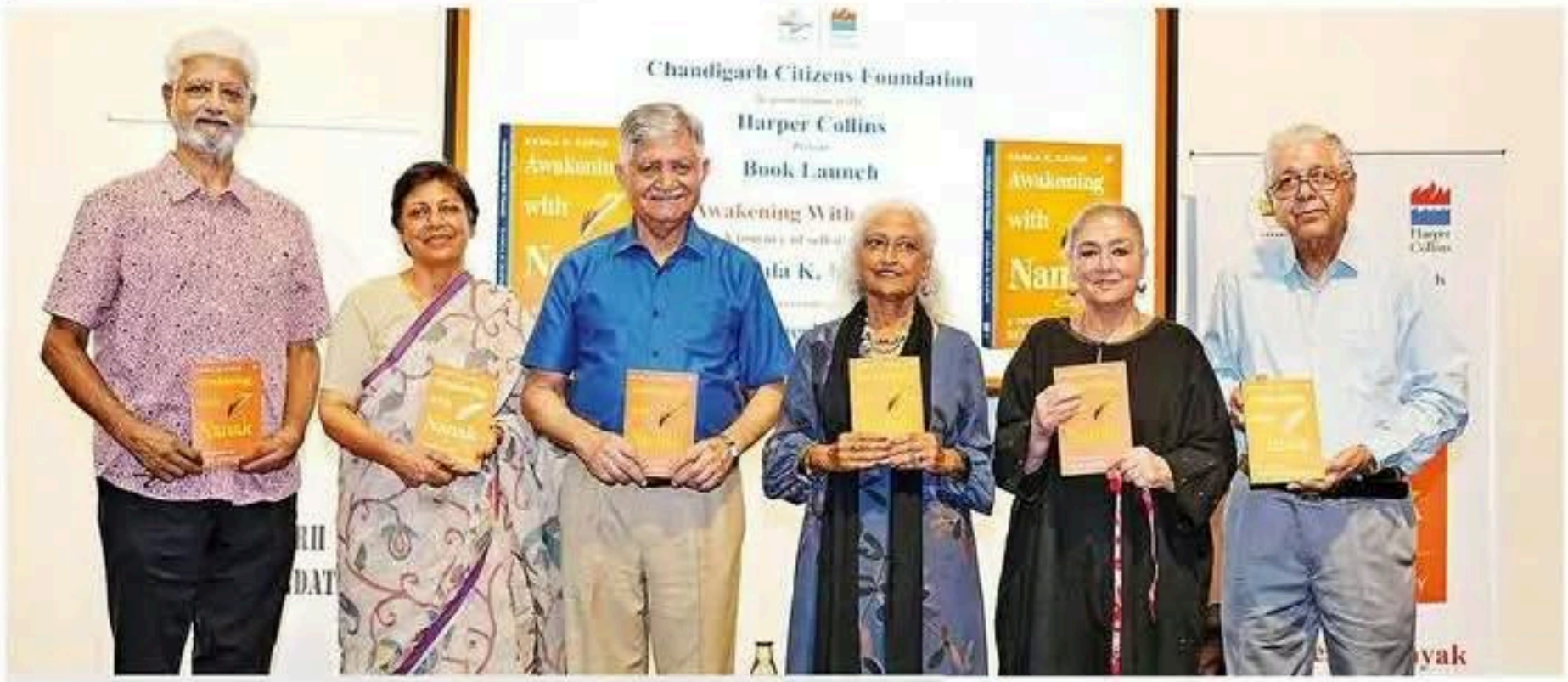

गुरु नानक - अतीत के पन्नों से परे, आज भी प्रासंगिक

अक्सर श्री गुरु नानक जी के जीवन को केवल इतिहास या धार्मिक ग्रंथों की सीमाओं में बांधकर देखा जाता है। लेकिन मेरी यह किताब इस भ्रम को तोड़ती है। मेरा मानना है कि गुरु नानक आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने कि वह पहले थे और हमेशा रहेंगे। यह किताब कोई पारंपरिक जीवनी या धर्मशास्त्रीय ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह दैनिक जीवन की उथल-पुथल से निपटने के लिए एक प्रेक्टिकल मैनुअल है। इसमें दर्द, असमंजस और मृत्यु के भय से जूझते हुए व्यक्ति के लिए वे उपकरण और तकनीकें बताई गई हैं, जिन्हें गुरु नानक देव जी ने अपने वचनों के माध्यम से मानवता को सौंपा है। जो मैंने उनकी गुरबाणी से सीखा, वह लिखा है।

हुकुम को स्वीकारना

श्री गुरु अर्जुन देव जी ने कहा - तेरा कीआ मीठा लागै... किताब के अंतिम अध्यायों में मैंने लिखा कि कैसे शारीरिक बीमारियां हावी थी। मृत्यु के करीब होने का अनुभव था। जब शरीर जवाब देने लगता है और मस्तिष्क की ऊर्जा क्षीण होने लगती है, तब कीर्तन, सिमरन, योग और प्रकृति का सान्निध्य ही संबल बनता है। अब मैं मानती हूं कि मृत्यु से भागने के बजाय, उसके साथ हाथ मिलाना और हुकुम में रहना ही जीवन को उसकी संपूर्णता में जीना सिखाता है।

सत्गुरु नानक प्रगटया, मिटी धुंध जग चानन होया... जब संसार में गुरु नानक आए, उनकी बाणी आई तो उन्होंने कई तरह के अंधेरों को समाज और हमारे जहन से दूर किया। जब कोहरे छंटते हैं और ज्ञान का प्रकाश फैलता है, तो जीवन एक नई दिशा पाता है। कुछ ऐसा ही अनुभव रहा लेखिका कमला के कपूर का, जिनकी किताब- अवेकनिंग विद नानक का विमोचन और उसे लेकर चर्चा शनिवार को सेक्टर-10 के गवर्नमेंट म्यूजियम एंड आर्ट गैलरी में हुई। इसे चंडीगढ़ सिटीजंस फाउंडेशन की ओर से आयोजित किया गया। इस मौके पर फॉर्मर चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ वीपी मलिक, फॉर्मर आईएएस विनी महाजन, पंजाब यूनिवर्सिटी के फॉर्मर वीसी डॉ. अरुण के ग्रोवर, वरिष्ठ रंगकर्मी व डायरेक्टर डॉ. नीलम मान सिंह चौधरी, भाई बलदीप सिंह शामिल हुई। सवालों का सिलसिला रामेश विनायक ने जारी रखा। किताब लिखने के ख्याल को लेकर लेखिका कमला ने कहा - इस किताब की शुरुआत किसी अकादमिक योजना या शोध के तहत नहीं हुई थी, बल्कि यह सुनने की प्रक्रिया से उपजी है। मैंने तब तक इस किताब को लिखने के बारे में नहीं सोचा, जब तक मैं किताब में दर्ज नौंवे अध्याय तक नहीं पहुंच गई। जब सेहत लगातार बिगड़ती गई, सामने कष्ट थे, तब श्री गुरु नानक देव जी की जीवंत उपस्थिति मुझे मेरे भीतर महसूस होने लगी। यह किताब मेरे 555 साल के दोस्त जो नानक हैं, उनसे जुड़ी है। जो मेरे अनुभव उनके साथ हैं, वह मैंने लिखे हैं। यह भीतर की यात्रा का वृत्तांत है। किताब का मकसद आतम् तीरथ से जोड़ना है, जिसमें हम अपने भीतर की तीर्थयात्रा कर सकें। नानक हमें सलाह देते हैं कि असली तीर्थयात्रा बाहर की नहीं, बल्कि अपने भीतर यानी उस जगह की ओर होनी चाहिए जहां प्रियतम और समस्त सुखों का स्रोत निवास करता है। अपनी आंतरिक यात्रा की ओर मुड़ना ही ईश्वर की ओर मुड़ना है।